सिंहनाद

सिंहनाद

श्रद्धेय दादा को
सादर
लवकुश
२९-५-६३

संकलनकर्ता एवं सम्पादक
लवकुश दीक्षित

दीन बन्धु प्रकाशन
अम्बरपुर, सीतापुर

सम्पादकीय कार्यालय
१९७, सराय मालीखां, लखनऊ-३

व्यवस्थापक		सहायक सम्पादक
श्री ताराचन्द माहेश्वरी		कुमारी मालती गुप्त
कुमारी मालती गुप्त		श्री रमाशंकर पाण्डेय
श्री निर्मल चन्द जैन		श्री सी. एम. बरनवाल
श्री शीतल प्रसाद		श्री जगदेव प्रसाद
श्री प्रमोद बिहारी मिश्र		

[मूल्य १·२५

१९६३]

सम्पादकीय

यह और किसी का नहीं समय का 'सिंहनाद' है। राष्ट्रनायकों और राज्यनायकों के साथ जन-जीवन की वाणी आज देश के कोने-कोने से गूँज उठी है:—

प्राणों की आहुति दे देंगे कैलास नहीं जाने देंगे।
हिमगिरि के बदले में उतना ही रक्त तौलकर दे देंगे।।

यह समय हमारी परीक्षा का है। यह संदेश हम सभी को मिलकर हर नगर, हर गाँव, हर घर में पहुँचाना है। सर्वप्रथम हम उन धरती के लालों का अभिनन्दन करते हैं जिनके सबल करों में यह 'सिंहनाद' पहुँच रहा है और इस संकटकालीन स्थिति में उनके कण्ठों में बस कर जीवन का उद्घोष बनेगा।

श्री ताराचन्द माहेश्वरी का उपकार हम कभी नहीं भूल सकते जिनके अथक परिश्रम एवं लगन का ही फल यह 'सिंहनाद' है। सर्वश्री रमाशंकर पाण्डेय, छंगामल बरनवाल तथा जगदेव प्रसाद सहयोगी ही नहीं अपितु इस संकलन के प्रकाशन में भरसक पथ-प्रदर्शन करते आये हैं। उनकी सूझ-बूझ और दूरदर्शिता ही इस पुस्तक का शृंगार है। कुमारी मालती गुप्त की सत्प्रेरणा से हम सभी लाभान्वित हुए हैं और होते ही रहेंगे।

अन्त में व्यवस्थापक मण्डल के सदस्यों एवं सर्वश्री निर्मलचन्द जैन, शीतल प्रसाद अवस्थी तथा मिश्र बन्धु कुलदीपक तथा प्रमोदबिहारी मिश्र को इस कार्य की सफल व्यवस्था के लिए हम सभी हार्दिक बधाई देते हैं।

सम्पादक मण्डल
'सिंहनाद'

दिनांक : २२-१-१९६३
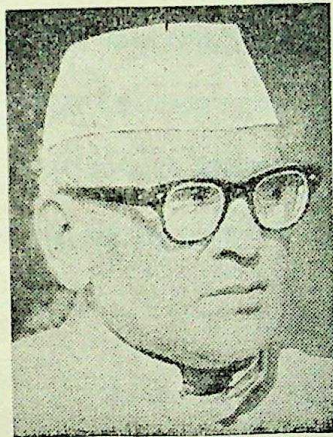
श्री चन्द्रभानु गुप्त
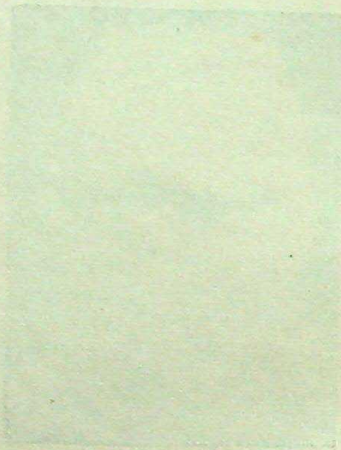
सुरन अँगार झरइँ

अइसी बीन बजाउ सरसुती सुरन अँगार झरइँ ।

हइ बजि उठी आजु रनभेरी, जुग के कृष्ण जगे ,

चक्कू कउरवा हँइ उठवाइन, अब रनु छाँड़ि भगे ।

नाक हिमालय की का कटिहँइ, ई राकस बउने ,

अस न होइ, घबराइ, हाँगहो मा ई बूड़ि मरइँ ।

सिधोली,
सीतापुर ।

रवीन्द्र कुमार श्रीवास्तव
ए०डी०ओ० (पंचायत)

जो रन हमैं प्रचारै कोऊ
लरौं सुखेन काल किम होऊ

—तुलसी

●

हिमाद्रि तुंग शृंग पर, प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयं प्रभा समुज्ज्वला स्वतन्त्रता पुकारती

—प्रसाद

●

तुलसी को कनियाँ माँ हुलसै,
सबके अँसुअन का परसादु ।
भारत के कन-कन माँ गूँजै,
'सिंहनादु' नरसिंह निनादु ।।

—लवकुश

●

हम त्वार तिलकु करी

सइयाँ तुम बनि जाउ सिपहिया हम त्वार तिलकु करी।

हरदी के पियरे रोचना पर अच्छतु फूटि परी।

चउघरिया आरति का दियना चउमुख जोति जरी।

फूलन की माला गर स्वाहै काजरु डीठि हरी!

म्वार सोहागु कोटि जलमन तक भुँइ का कोंछु भरी।

माटी के मूड़े पर ते बिधना का कजुँ टरी।

सीमा की रिच्छा मा मोरिउ बाँझिनि कोखि फरी।

अम्बरपुर,
सीतापुर।

--कुमारी रजनी दीक्षित
(पुत्री स्व० 'पढ़ीस')

पलास-पत्र का वृक्ष के प्रति उपालम्भ

युगन के साथी बन्धु पलास, रहित साखिन से रहिबा संग।
सिहाइत लपटित छिन-छिन धाय, बचाइत सब तापन ते अंग॥

जेठ की लूहन की लहकोरि, बटोरित महक निचोरि-निचोरि।
पियाइत भरि-भरि अंजुरी तुम्हैं, सुर्ज की किरन अँजोरि-अँजोरि॥

घिरैं बरषा की करिया अनीं, बिजुरिया खांड़ा धनुहाँ तानि।
बौंडरा घेरि-घेरि झकझोरि, करै छिन माँ जरजर खैखानि॥

जाड़ु नस-नस छलनी कै देय, ताप दुख दारुन बालै देय।
काल की चला करैं खुरचाल, सबै ऋतु बढ़ि-बढ़ि लोहा लेंय॥

मुला सब अपने ऊपर झेलि, सिहाईं सब दिन तुमका झांपि।
कैस है हमरा तुम्हरा संग, न कोई सका परोसी भांपि॥

सबै कुछ देखेन तुम्हरे संग, मुला यह पूर न भै अभिलाष।
रहेन हम जबलैं तुम्हरे संग, न कबहूँ फूल्यो सखा पलास॥

फूलतिउ हमरे आगे कबौं, देखि कै जियरा जाति जुड़ाय।
जबै हमका न्यारे कै सकेउ, तबै हँसि फूलि उठेउ हहराय॥

ऐस तुम राखउ हमते भेदु, ऐस तुम हमका तकेउ बिरान।
जीर्ण ह्वै जब हम भुइँ माँ गिरेन, तबै हँसि फूल्यो खोलि जबान॥

देउ यह सब दिन गहिरी चोट, वज्र अस सहिति करेजु मसोसि।
फिरी झखमारति लपटित धाय, भागि कर्मन का कोसि करोसि॥

न कबहूँ निकसी मुँह ते बात, बिनु कहे चित्तु रहा घबराय।
कौन हित फिरि अब तुमका मिली, कौनु सुख आगे देहौ भाय॥

मन्योरा, लखीमपुर

--बंशीधर शुक्ल

ता के र हे व!

छाँव करि सुख की, अचल ऊँचा ठाँव राखै,
बाँउँ ते बचावै नन्दगाँव का अहिरवा।
उजल बिजल जसु छावति छ-रितु रहै,
चमकै चरितु जइसै गंगा - जलु थिरवा।
जाति हौ तौ बिनती सनेही यह आदि राख्यो
मुरझि न जाय प्रेम-प्रीति क्यार बिरवा।
सींच्यो सदा जलु लइ, लता का तुम माली बनि,
ताके रहेव काटै ना कुसीलाका त्रिरवा।

लक्ष्मण प्रसाद 'मित्र'

सजन ! तुम जाउ लाम पर !

देसवा पै बिपति परी—

सजन तुम जाउ लाम पर !

द्वारेकि निंबियाकि सीतल छाँहीं,
सुधि रही साथ, डारि गलबाहीं,

कुअनाक नीरु, पियास बुझायी,
हमरिउ आस फरी—

सजन तुम जाउ लाम पर !

बाबा की तरवारि पुकारइ,
बीरु न कबहूँ हिम्मति हारइ,

घर के सब जन रहे सिपाही,
हमहूँ वहइ करी—

सजन तुम जाउ लाम पर !

बिरथा बातइ जीत-हार की—
जग की डोली के कहार की,

मौतउ जहाँ जिन्दगी बनिकइ,
हइ बेमौत मरी—

सजन तुम जाउ लाम पर !

'स्वतंत्र भारत,'
लखनऊ।

—दिवाकर

चेतउनी !

चेतु रे माली फुलवरिया के।

बड़ी जुगुति ते साफु केहे तुइ झंखर झारि कटीले,
हिये रकतु दइ दइ सींचे रे सुन्दर बिरिछ छबीले,
रहि ना जायँ गुलाब के धोखे काँटा झरबेरिया के।
चेतु रे माली फुलवरिया के।

दूरि छतिज की ओर देखु घिरतै आवै करियारी,
बउखा आवै के पहिले तुइ पोढ़ि बाँधि ले क्यारी,
फूटि न बहैं कगार टुटहिले थाल्हा की नेरिया के।
चेतु रे माली फुलवरिया के।

सोंचु भला क्यतने तुइ खोये फूलि फरे फल घउदा,
क्यतने त्वार पुहुप लइ डारिनि पाला पाथर कउँधा,
अनगिनतिन मुरझान डार क्वाँभा गुलदुपहरिया के।
चेतु रे माली फुलवरिया के।

आवै वाली फसिलि रुपहुली ले निरद्वन्द कुदारि,
खोदि खादि भुइँ समथरि करु औ बढ़िया ढूँढ़ बेसारु,
चूके ई छिन पाय सकै ना सोने की बेरिया के।
चेतु रे माली फुलवरिया के।

नई फसिलि के नये फूल, खिलि महकइहैं संसारु,
टूटि डार ते गूँथि बनै जो देउतन के हिय हारु,
सूखि पराग सँजीवनि लइ बिहरैं सँग पुरवइया के।
चेतु रे माली फुलवरिया के।

आकाशवाणी,
इलाहाबाद।

—युक्तिभद्र दीक्षित 'पुतान'
(पुत्र पढ़ीस)

गं गा म इ या !

दुखियन के दुख हरेउ सदा पापिन के पाप नसायौ
हो गंगा मइया अब काहे देर लगायौ ।

सीस मुकुट की तुम तौ सोभा कइसे चुप्पी साध्यो,
फरलै जिनके साथ बँधी, मइया कस उनका बाँध्यो,
जउने घर मा जलमु लेहेव कइसे वहिका बिसरायौ,
हो गंगा मइया अब काहे देर लगायौ ।

गिरि राजा की राज दुलारी कइलासी ते च्यालौ,
भोले नाथ बहुत सोयौ अब तीसर दीदा खालौ,
फूंकि देउ बैरिन की फउजै संकर का समुझायौ,
हो गङ्गा मइया अब काहे देर लगायौ ।

हुवै कहूँ होइहैं पंडा पंचाली के रखवारे
उनते कहेव दुसासनु दोखी डारै चीर उघारे,
तुम तौ मइया सबु जनती हौ अबलाकी लाज बचायौ,
हो गंगा मइया अब काहे देर लगायो।

मँगियन का सेंदुरु सूखै जूझैं बहिनिन के बिरना,
महतारिन की कोखि जरै बिलखै सूने घर अँगना,
मुलौ न मोरी धरती का अब कउनौ अंगु कटायौ,
हो गंगा मइया अब काहे देर लगायो।

ज्यतनी बलि मांगौ मइया हम धूरे पर पहुँचइबै,
चालिस कोटि लाल भारत के तुमरी भेंट चढ़इबै,
मुलौ न मोरे भारत का अब फिरिकै दासु बनायौ,
हो गंगा मइया अब काहे देर लगायो।

हहरि उठा सागरु मइया अब उलटी धार बहावउ,
याक लहरि असि उठै मुँहु जरेन का ठीहे पहुँचावउ,
बप्पा की पगिया का मइया जग मा अब न झुकायौ,
हो गंगा मइमा अब काहे देर लगायो।

अम्बरपुर,
सीतापुर।

—'लवकुश'
(पुत्र पढ़ीस)

"जौहर" | दिनकर

जगता तभी जहान, उसे जब विपद जगाती है।
हँसी भूल बच्चे चिंतन करने लगते हैं।
बहनें जातीं डूब किसी गम्भीर ध्यान में।
कुसुम खोजने लगते अपनी आग,
ऊँघती नदी तेज होकर हहराती है।
पेड़ उठाकर कान प्रलय की चरण-चाप सुनते हैं,
हवा झांकने को भविष्य की आहट रुक जाती है,
आर-पार अम्बर के जब शंपा चिल्लाती है।
भारत में जब कभी कड़कता वज्र
सती भामिनियाँ सहसा हो उठतीं निर्मम, कठोर।
दाँतों से अधर दबा, आँखों के अश्रु रोक,
बलि-वेला की आरती, पुष्प, रोली सहेज,
पुरुषों को रण में भेज, चंडिकाएँ सगर्व—
सिन्दूर लेप, घर-घर उमंग की शिखा सजाती हैं।
विजयी अगर स्वदेश, प्रिया-प्रियतम का फिर नाता है।
विजयी अगर स्वदेश, पुरुष फिर पुत्र, त्रिया माता है।
किन्तु, पताका झुकी अगर बलिदान की,
गर्दन ऊँची रही न हिन्दुस्तान की,
पुरुष पीठ पर लिए घाव रोते रहें।
आँसू से अपना कलंक धोते रहें,
पर जातीय कलंक, देश की माताएँ सहतीं नहीं;
परम्परा है, चीख-चीख, वे पीड़ाएँ कहतीं नहीं।
हारे नर को देख, देवियाँ दबी ग्लानि के भार से—
जल उठती हैं, अगर, काट सकतीं न कंठ तलवार से।

आर्य कुमार मार्ग
पटना-४

उघरे अन्त न होहि निबाहू | • बच्चन

अगर दुश्मन
खींचकर तलवार
करता वार,
उससे नित्य प्रत्याशित यही है,
चाहिये इसके लिये तैयार रहना;
यदि है अपरिचित, अजनबी,
कर खड्ग ले
आगे खड़ा हो जाय,
अचरज बड़ा होगा,
कम कठिन होगा नहीं उससे संभलना;
किन्तु युग-युग मीत अपना,
जो कि भाई को दुहाई दे,
दिशाएँ हो गुँजाता,
शीलवान जहान भर को हो जनाता,
पीठ में सहसा छुरा यदि भोंकता,
परिताप से, विक्षोभ से, आक्रोश से,
आत्मा तड़पती,
नीति धुनती शीश,
छाती पीट मर्यादा बिलखती,
विश्व मानस के लिए सम्भव न होता,
इस तरह का पाशविक आघात सहना;
शाप इससे भी बड़ा है शत्रु का प्रच्छन्न रहना।
यह नहीं आघात, रावण का उघरना;
राम-रावण की कथा की--

आज पुनरावृति हुई है।
हो दशानन कलियुगी,
त्रेतायुगी,
छल-छद्म ही आधार उसके—
बने भाई या भिखारी,
जिस किसी भी रूप में मारीच को संगी बनाए,
कई उसके रूप जाते हैं बताए।
आज रावण दक्षिणापथ नहीं,
उत्तर से उतर
हर ले गया है,
नहीं सीता, किन्तु शीता--
शीत-हिम मंडित —
शिखर की रेख सोमा से सुरक्षित
शान्त, निर्मल घाटियों को,
स्तब्ध करके,
दग्ध करके,
उन्हें अपनी
दानवी गुरु गर्जना की बिजलियों से
और इस सीता-हरण में
नहीं केवल एक
समरोन्मुख, सहस्रों,
लौह काय जटायु
घायल - मरे,
अपने शौर्य शोणित की कहानी,
श्वेत हिमगिरि की —
शिलाओं पर,
अमिट,
लिखते गए हैं।
इसलिए फिर आज

सूरज-चाँद
पृथ्वी, पवन को, अकाश का
साखी बनाकर
तुम करो
संक्षिप्त
पर गम्भीर-दृढ़
भीष्म-प्रतिज्ञा,
देश जन-गण-मन समाए राम:—
अक्षत आन,
अक्षत प्राण !
अक्षत काय
"जौ मैं राम तो कुल सहित कहिहि दशानन आय"

१३. विलिंगडन क्रिसेन्ट,

नई दिल्ली

माँ ने फिर हमें पुकारा

• नीरज

माँ ने फिर हमें पुकारा,
जागा फिर देश हमारा,
खोलो गंगा की धारा,
चीनी की चटनी बन जाए--जवानो बढ़ो आगे बढ़ो !
जय हो हिन्दोस्तान की,
जय हर वीर जवान की !

हर आँधी है बहन हमारी, भाई हर तूफान है,
बाहों में फौलाद जड़ा है, सीना ज्यों चट्टान है,
रोक सकें जो तुम्हें अभी तक बनी नहीं वे गोलियाँ,
झुक झुक गए पहाड़ जिस तरफ बढ़ी तुम्हारी टोलियाँ।
उट्ठो अपना बल तोलो,
तोपों के जबड़े खोलो,
ऐसा रे धावा बोलो--
चाऊ को माऊ याद आए—जवानो बढ़ो आगे बढ़ो !
जय हो हिन्दोस्तान की,
जय हर वीर जवान की !

रक्षा हमको करनी है माँ बहनों के सिन्दूर की,
हर हिन्दू की रोटी की, हर मुस्लिम के तन्दूर की,
मन्दिर अपना, मस्जिद अपनी, अपना हर गुद्धरारा है,
और हिमालय तो हमको प्राणों से ज्यादा प्यारा है,
मरने को जीना कर दो,
जन-जन का दुःखड़ा हर दो,
माँ का सब कर्जा भर दो,
बगिया खिली न मुरझाए —जवानो बढ़ो आगे बढ़ो !
जय हो हिन्दोस्तान की,
जय हर वीर जवान की !

सौ-सौ चीनी को काफी बस अपना एक जवान है,
हर सैनिक राणा प्रताप है, थाना हर चौहान है,
तेग शिवा जी की फिर से है मचल उठी हर म्यान में,
चंगेजों की कब्र बनेगी शायद हिन्दोस्तान में,
सूरज की ढाल बनाओ,
बिजली का कवच सजाओ,
ऐसी ज्वाला सुलगाओ,
दुश्मन की होली जल जाए--जवानो बढ़ो आगे बढ़ो !
जय हो हिन्दोस्तान की,
जय हर वीर जवान की !

आजादी कायम रहती है मेहनत से औ' काम से,
और चली जाती है घर से वह गफलत आराम से,
खून पसीने में बदले वह उसका पहरेदार है,
काम चोर जो हैं वे उसकी नजरों में गद्दार हैं,
गद्दारों को दफना दो,
जयचन्दी नस्ल मिटा दो,
घर-घर रण-बिगुल बजा दो,
कोई न सोता रह जाए—जवानो बढ़ो आगे बढ़ो !
जय हो हिन्दोस्तान की,
जय हर वीर जवान की !

देहरी है लद्दाख हमारी, नेफा घर का द्वार है,
आंगन है आसाम, हिमालय आँगन की दीवार है,
कंकर-कंकर शिवशंकर है तीर्थराज कैलास का,
मानसरोवर आमुख है निज भारत के इतिहास का,
सारा लद्दाख छुड़ाओ,
नेफा आजाद कराओ,
तिब्बत तक कदम बढ़ाओ,
पेकिंग में झंडा लहराए—जवान बढ़ो आगे बढ़ो !
जय हो हिन्दोस्तान की,
जय हर वीर जवान की !

४७ मारिसमार्ग,
अलीगढ़

इन चीनी लुटेरों को हिमालय से निकालो

● गोपाल सिंह 'नेपाली'

भारत के जवानों !
भारत के जवानों !
भारत से तुम्हें प्यार तो बन्दूक उठालो !
इन चीनी लुटेरों को हिमालय से निकालो !
भारत के जवानों !
भारत के जवानों !

चोरों की तरह तोड़ के ईमान के घेरे,
इस पार चले आ रहे बेशर्म लुटेरे,
ये शर्म न जाने न दया धर्म ही माने,
तोपों से इन्हें मार के उस पार हटा लो !
इन चीनी लुटेरों को हिमालय से निकालो !

तिब्बत का लहू चूस के इस ओर चले हैं,
धर आदमी का भेष आदमखोर चले हैं,
इन्सान कहाते हैं मगर खून बहाते,
तुम इनका गरम खून बहा करके नहालो।
इन चीनी लुटेरों को हिमालय से निकालो !

आँधी में उड़ा, खून सना 'लाल - सितारा;
कहता है चीनी चोर-हिमालय है हमारा,
ये लूटने आए हैं जवाहर का तिरंगा,
तुम लाल सितारे पे तिरंगे को उड़ालो !
इन चीनी लुटेरों को हिमालय से निकालो !

आजाद अमर हिन्द का है ताज हिमालय,
देखें तो कौन छीनता है आज हिमालय,
जो ताज पहनना है तो भारत के जवानों,
तुम चीन की तलवार से तलवार बजालो !
इन चीनी लुटेरों को हिमालय से निकालो !

चोटी हो पहाड़ों की या बर्फों की जवानी,
जंगल हो, रेगिस्तान हो, या पानी ही पानी,
हम देश का एक इंच भी दुश्मन को न देंगे,
दुश्मन पे चढ़ा खून तो संगीन उठा लो !
इन चीनी लुटेरों को हिमालय से निकालो !

कहते हैं हिमालय जिसे, दिल्ली का किला है,
भारत को जनमभूमि की झोली में मिला है,
आजाद हिमालय बिना दिल्ली न रहेगी,
तुम 'लाल किला' और हिमालय को मिला लो !
इन चीनी लुटेरों को हिमालय से निकालो !

दुश्मन है कहां कौन, कहाँ दोस्त, परख लो,
कुछ दिन को अहिंसा का धरम जेब में रख लो,
लातों के पुजारी कभी बातों से न मानें,
जो न्याय न मानें उसे तुम रण में मनालो !
इन चीनी लुटेरों को हिमालय से निकालो !

बढ़ते ही चलो, खून की स्याही की कसम है,
सीने पे गोली खाये सिपाही की कसम है,
ईश्वर की कसम है औ' इलाही की कसम है,
पंजे से लुटेरों के, पहाड़ों को छुड़ा लो !
इन चीनो लुटेरों को हिमालय से निकालो !

चिंचोली, मलाड,
बम्बई–६४

चल खेत में या कारखाने में | ● रामावतार त्यागी

जलूसों और नारों से,
प्रदर्शन या प्रचारों से,
न कोई देश जीता है—
सभाएँ बन्द कर, चल खेत में या कारखाने में।
सिपाही के लिए कपड़े, जवानों के लिए भोजन,
सभाएँ बुन नहीं सकतीं, उगा सकते नहीं नारे,
पड़ा है देश पर संकट, लगी है आन की बाजी,
यही तो है समय कुछ काम कर, कुछ काम कर प्यारे।
विवादों को उठाने से,
गड़े मुर्दे जिलाने से,
न कोई देश जीता है—
सभाएँ बंद कर, चल खेत में या कारखाने में!
गरजता है अगर अम्बर, लरजती है अगर धरती,
मगर खाली नहीं बैठो, इसी में देश की जय है,
हजारों आँधियाँ आएँ, हजारों बिजलियाँ टूटें--
कुदाली को रहो थामे, तुम्हारा ही हिमालय है।
महज बैठक जमाने से,
निरी बातें बनाने से,
न कोई देश जीता है--
सभाएँ बन्द कर, चल खेत में या कारखाने में।
सिपाही देश की खातिर लहू अपना बहाते हैं,
शहीदों के चमन को दो बहारें फूल महकाओ,
अँधेरे द्वार को दीपक उनींदी आँख को सपना,
गली को रोशनी दो जिन्दगी में ताजगी लाओ!
दिमागी योजनाओं से,
विरस आलोचनाओं से,
न कोई देश जीता है—
सभाएँ बंद कर, चल खेत में या कारखाने में।

३३७६, रणजीत नगर, पूसा गेट;
नई दिल्ली—१२

जागो हे समाधिस्थ !

● डा० रमा सिंह

जागो हे दीप्त किरण, जागो !
जागो हे दीप्त सूर्य, जागो !

विघ्नों के काले ये—
बादल मँडराये हैं;
खुली सी दिशाओं पर,
कालिख ये लाये हैं।

अंधकार पीने को—
जागो हे दीप्त किरण !
जागो हे दीप्त सूर्य !

जागो हे समाधिस्थ, जागो !
जागो हे कामदहन, जागो !

हिमगिरि के प्रांगण में,
तृष्णा जो नाच रही,
साधना डिगाने को—
बाधा जो व्याप रही।

भस्म वही करने को—
जागो हे समाधिस्थ !
जागो हे कामदहन !

जागो हे दिव्यशक्ति, जागो !
जागो हे महाशक्ति, जागो !

लोलुप सी हिंसा के—
जन्मे जो रक्तबीज;
पुण्यमयी धरती को—
खलते जो रक्तबीज।

आज उन्हें पीने को—
जागो हे दिव्यशक्ति !
जागो हे महाशक्ति !

सिंह लाज, हसनगंज पार
लखनऊ।

●

वह वेला आ गयी | ● केदारनाथ मिश्र 'प्रभात

वह वेला आ गयी कि जब उष्णता बदलती ज्वाला में,
निर्झर-नदियाँ जब होतीं उद्घोषित वारिदमाला में,
जब करता अभियान पराक्रम निर्भय उल्कापातों में,
सैनिक बनकर तिनका-तिनका बढ़ता झंझावातों में।

वह वेला आ गयी कि जब हड्डियाँ मशाल जलाती हैं,
बलिशाला की कलियाँ भी इस्पात बनायी जाती हैं,
वह वेला आ गयी मरुत्पथ लोहित समिदाधानों में,
ओ हिलकोर विफलता के, टकराते क्यों चट्टानों से।

जितना प्रबल विरोध, शौर्य उतना ही बढ़ता वीरों का,
प्रतिरोधों के बीच उभरता, उग्र तेज रणधीरों का,
विपत्काल में वर्धमान, संकट के समय दहकता सा,
खतरों से खेले पौरुष, ज्यों पावक-पुंज लहकता सा।

पटना।

पड़ोसी (चीन) से

● बेधड़क

क्या करें हम नेह, तिलचट्टे हो तुम,
दोस्ती के नाम पर बट्टे हो तुम;
फट गया दिल आज तुमसे बेधड़क,
नाम चीनी है मगर खट्टे हो तुम।

कहते हैं सौ गोती से बड़ा यार पड़ोसी,
होता है बड़े वक्त मददगार पड़ोसी;
पर दोस्त बेधड़क उस दोस्त का क्या हो,
जिसको मिलें तेरी तरह दो चार पड़ोसी।

ऐ चीन मेरे खूब आये दोस्ती करने,
हमदम हुए हम दोस्ती का दम लगे भरने;
बढ़कर ललक के प्यार से लिपटा के बेधड़क,
चुपके से लगे दोस्त का पाकेट ही कतरने।

इसे तुम बेधड़क बेकार मत समझो, हिमालय है,
इसे तुम 'चाइना क्ले' यार मत समझो हिमालय है;
बढ़ाया मुँह इधर तो दाँत बचने का नहीं कोई,
इसे मक्खनका तुम अम्बार मत समझो हिमालय है।

यहाँ सोची है लड़कों ने अनोखी स्कीम अपने से,
समय आ जायेगा बन जायेंगे हम भीम अपने से;
हिमालय की बरफ में बेधड़क चीनी अगर आये,
तो क्या अचरज अगर बनजायँ आइसक्रीम अपनेसे।

लखनऊ।

●

"सिंहनाद" | ● राजबहादुर 'विकल'

नगराज हिमालय के आँगन में, मेघ घिरे अँगारों के,
पावन प्रभात पर होते हैं घातक प्रहार अँधियारों के।
बो रहा मरण के बीज, शान्ति के आँगन में फिर सर्वनाश,
है ज्योतिमती सीमाओं पर, झंझावातों का अट्टहास।
धरती घायल सी चीख रही, रो रहा अनाथों सा अम्बर,
घुस रहे शान्ति के आँगन में क्यों अँगारों के सौदागर ?
लग गई बर्फ में आग बुझायेंगे शोणित की धारों से,
दानवता को उत्तर देंगे तलवारों का तलवारों से।
चल पड़े राम फिर दस्यु देश से अपनी सीता लाने को,
वज्रांग गरजते बार बार पापी लंका सुलगाने को।
ओ चीरहरण करने वाले तुझको विनाश ले आया है,
बाँसुरी फेंक वृन्दावन में मोहन ने चक्र उठाया है।
बज गया समर का पाञ्चजन्य, अरि का अभिमान मिटा देंगे;
अपनी सीमाओं से पापी का नाम निशान मिटा देंगे।
जो देवदारुओं की सुगंधि में जहर मिलाने आया हो,
जो हरी भरी फुलवारी पर आँधियाँ बिछाने आया हो।
जो भारत माँ के मस्तक पर ठोकरें मारने आया हो,
चालीस कोटि सन्तानों की इज्जत उतारने आया हो,
वह जीवित जा पाये तब तो धिक्कार देश के पानी को,
धिक्कार हमारे पौरुष को लपटों सी खिली जवानी को।
हम चन्द्रगुप्त के वंशज, हैं, बाँधते मुकुट अँगारों का,
पानी उतरा जिसके आगे था यूनानी तलवारों का।
जागे शकारि विक्रमादित्य भूकम्प जगा कर मानेंगे,
भेड़ियो तुम्हें हम सीमा से उस पार भगाकर मानेंगे।

तुम हूणों से बर्बर हो तो हम आज "हर्ष" बन जायेंगे,
अपने स्वदेश की सीमा पर पापों की कब्र बनायेंगे।
तुम प्रलय काल की पोथी के पहले अक्षर हो, द्वन्द्व नया,
मेरा भारत है निर्माणों के महाकाव्य का छन्द नया।
तुम मानवता के फूल कुचल देते सिंहासन पाने को,
हम सिंहासन ठुकरा देते, जग के आँसू पी जाने को।
इतिहास गवाही देता है, गौतम ने तुम्हें जगाया था,
यमुना तट पर हमने आगे बढ़ करके गले लगाया था।
क्या यही तुम्हारा साम्यवाद, बस्ती वीरान बराबर हो?
क्या यही तुम्हारा साम्यवाद, मानव हैवान बराबर हो?
आगे बढ़ते जाते जवान, गोरा-बादल की आन लिए,
राणा प्रताप का ओज-तेज, शिवराज वीर की शान लिए।
गोविन्द चले, बन्दा दौड़ा, बलि से अँचल भर डालेगा,
भारत भर भामाशाह बना, सर्वस्व दान कर डालेगा।
जिसने केशों को पकड़ा उसका धड़ से शीश उतारेंगे,
हम लाल चीन के लोहू से माता के चरण पखारेंगे।
कोई भी ताकत संगीनों से हमको दबा न पायेगी,
अँगारों की बरसात चेतना-रवि को डुबा न पायेगी।
चिग्घाड़ उठा है शैलराट, मुख महाकाल ने खोला है,
धरती अम्बर की खैर नहीं फन शेषनाग का डोला है।
ओ उठे हिमालय! तू साक्षी, हम सब पर तेरी छाया है,
संयम का बांध टूट जाने पर ही यह कदम उठाया है।

जलालाबाद, शाहजहाँपुर।

●

अपना नगराज नहीं देंगे

● प्रमोद बिहारी मिश्र

—:००:—

जब तक हैं तन में प्राण अरे ! माता का ताज नही देंगे,
रे चीन कृतघ्नी सावधान ! अपना नगराज नहीं देंगें।

मिथ्याडम्बर, पाखण्ड दिखा मैत्री का स्वांग किया तूने,
विश्वासघात कर फिर पामर ! हिमगिरि को पार किया तूने।
ले पञ्चशील की आड़ कहा 'हिन्दी - चीनी भाई - भाई',
फिर हत्या कर नैतिकता की भाई पर वार किया तूने।
पर समझे हो क्या हम इसका बदला मय ब्याज नहीं देंगे।
रे चीन कृतघ्नी सावधान०

धोखे से दौलतबेग लिया नेफा में कहर मचा डाला,
हिंसा का नग्न प्रदर्शन कर पशुता को अरे कँपा डाला,

पर सावधान रे अधम ! आज रणचंडी का आह्वान हुआ,
करने को अरि शिरमेध पुलक यह पावन यज्ञ विधान हुआ,
काली-कपालिनी को, हँस-हँस रिपुमस्तक भेंट वहीं देंगे।
रे चीन कृतघ्नी सावधान०

अग्नि-स्फुलिंग, विद्युत के कण, वर चन्द्रहास, राघव के शर,
पशुपति का शूल, इन्द्र का पवि, चंडी की शक्ति अमोघ प्रखर;
छूटेंगे सहसा एक साथ है जगा देश का अब कण-कण,
क्षण में मच जाये प्रलयकाल गूंजे हर-हर बम-बम का स्वर।

कर देंगे तेरा सर्वनाश रहने यह साज नहीं देंगे।
रे चीन कृतघ्नी सावधान! अपना नगराज नहीं देंगे।

गंधौली, सीतापुर।

खून चाहिए

● उन्मत्त

बहू-बेटियों नववधुओं के सुख-सुहाग को खून चाहिए !
खानदान के इकलौते बुझते चिराग को खून चाहिए !
मातृभूमि के दृढ़ सेनानी वीतराग को खून चाहिए !
धधक-धधककर सीमा पर जलरही आगको खून चाहिए !

खून चाहिए माँ के उन कट मरते राजदुलारों को,
बीरन भैया को रण थल में घायल प्राण पियारों को,
हँसते हँसते जूझ रहे भारत के उन सरदारों को,
आजादी के दीवानों, सीमा के पहरेदारों को।

खून चाहिए आज देश के नौनिहाल ललकार सकें,
प्राणप्रिया के प्रियतम माँ के वीर लाल ललकार सकें,
अरि समूह के मर्दन हित बन महाकाल ललकार सकें,
सुदृढ़ बाहुओं से बैरी को ठोक ताल ललकार सकें।

खून चाहिए आज बालकों वृद्धों और जवानों को,
भिखमंगों, श्रमिकों, धनिकों, धरती के पूत किसानों का,
राम-कृष्ण, गौतम, शंकर, बाबर की दृढ़ संतानों का,
खून चाहिए आज देश को अपढ़ों का विद्वानों का।

वे हँसकर मर रहे कि जिससे आज देश की लाज रहे,
भारत माँ के हिम-किरीट की और केश की लाज रहे,
गौतम कपिल कणादि अत्रि के साधु वेश की लाज रहे,
कटने थे कट चुके अंग पर बची शेष की लाज रहे।

लखनऊ

"चीन देश हत्यारा है" | रामस्वरूप सिंदूर

संकट आया देश पर,
धार धरो आवेश पर,

हमको भाई-भाई कह कर छुरा पीठ में मारा है।
चीन देश हत्यारा है।

जिसने यह तन दिया, उसे इस तन की आज जरूरत है,
जिसने जीवन दिया, उसे जीवन की आज जरूरत है;
दाता ने जो दिया, उसे उस ऋण की आज जरूरत है,
मातृभूमि को धनवानों, निर्धन की आज जरूरत है,

निशि - वासर के साथियो,
घर बाहर के साथियो,

दीवाली के दिन भी, हम सबके घर में अँधियारा है।
चीन देश हत्यारा है।

कोटनीस के बलिदानों को, भुला दिया इस चीन ने,
ब्रह्मपुत्र का हृदय चीर कर, रक्त पिया इस चीन ने;
वक्त पड़े, हिन्दोस्तान से, सबक लिया इस चीन ने;
पग पखार गौतम के सिर पर वार किया इस चीन ने,

दंभी को आघात दो,
दोहरी - तिहरी मात दो,

नेहरू के दूधिया कपोतों पर उठ गया दुधारा है।
चीन देश हत्यारा है।

गद्दार चीन हो सावधान !

● सरोजनी श्रीवास्तव

गद्दार चीन हो सावधान, अब दांव न चलने पायेंगे।
फिर आगे कदम बढ़ाया तो, पेकिंग शमशान बनायेंगे॥

माना कि अहिंसा प्रिय हमको, पर कायर नहीं कहायेंगे।
भारत माता की रक्षा में, हँस-हँस कर शीश कटायेंगे॥

सब कुछ सह सकते हैं लेकिन, मां का अपमान न सह सकते।
हम आजादी के दीवाने, बलिवेदी पर चढ़ जायेंगे॥

अब नेफा औ' लद्दाख छोड़, चाऊ तुम अपने घर जाओ।
जागे भारत के सुप्त सिंह, मिट्टी में तुम्हें मिलायेंगे॥

तुमने छेड़ा है शंकर को, उनका प्रलयङ्कर रूप जगा।
क्रोधानल में कर आत्मसात, तन नई भभूत रमायेंगे॥

तिब्बत न समझना भारत को, हर व्यक्ति यहां का सेनानी।
अब तक जो खून पिया तुमने, बदला अब वीर चुकायेंगे॥

जिस मिट्टी ने पाला पोसा, है आज उसी में सो जाना।
सर्वस्व निछावर करके भी, हम आज उऋण हो जायेंगे॥

बलिवेला है बलिदान करो, बढ़ने का नव आह्वान करो।
है यही प्रतिज्ञा नेहरू की, हम विजय केतु फहरायेंगे॥

गनेशगंज, लखनऊ

नया वर्ष !
नयी उषा !!
नया संदेश

'अलिन्द'

नये वर्ष की नयी ऊषा संदेश नया लायी !
धरती पर नव ज्योति, नवल जय श्री बनकर छाई !!

उस धरती पर, जिस पर रहते औढरदानी हैं,
आन-बान पर मर मिटने वाले जो मानी हैं,

जिसके लाखों पूत शिवा राणा प्रताप जैसे,
उस पर कब किस रिपु की माया शासन कर पायी ? नये०।।

प्रहरी जिसका नगपति, जिसकी कीर्ति अमर जग में,
रत्नाकर नित अर्घ्य चढ़ाता जिसके युग पग में,

उस भारत माँ पर कुदृष्टि जिसने भी है डाली,
उसके सिर पर कन्धर, उसकी शामत है आयी ! नये० ।।

युग-युग से जो देश पूर्ण का है श्रृंगार रहा,
ओज-तेज से पूर्ण प्रज्वलित जो अंगार रहा,

वह है भारतवर्ष, वर्ष यह उसकी जय का है,
अमरों ने भी जिसकी यशगाथा सदैव गायी !

लखनऊ ।

वेला है बलिदान की | ● रामबहादुर सिंह भदौरिया

अग्निपरीक्षा आज हो रही मेरे देश महान की।
बढ़ो जवानो फिर से आई वेला है बलिदान की।
अब कहने का नहीं सिर्फ करने का अवसर आया है,
बड़े भाग्य से माँ का ऋण भरने का अवसर आया है,
एक हाथ से सृजन एक से तुम्हें हिफाजत करनी है,
'विष्णु' और 'शंकर' दोनों की ही यह पावन धरणी है,
समर भूमि के साथ साथ सुधि रहे खेत खलिहान की।
आजादी है नाम त्याग का, तन-मन-धन सब वार दो,
कोई कंटक रहे न पथ पर ऐसा उसे बुहार दो,
मुँह न ताकना पड़े किसी का अब अभाव के गाँव को,
हमें आत्मनिर्भर करनी है स्वतन्त्रता की नाव को,
प्रगति पंथ पर पाँव बढ़ाओ बाजी रख कर प्रान की।
घर पीछे यदि एक शीश का सुमन चढ़े नगपति पग पर,
बलिदानी बन जाय देश का आज अगर हर गाँव-नगर,
तो हर व्यक्ति समझ पायेगा आजादी की कीमत को,
कोई नहीं छिपायेगा फिर सच्चाई की दौलत को,
बाँह पकड़ कर सभी चलेंगे मेहनत की, ईमान की।
घर ही नहीं, हमें दृढ़ करनी घर की हैं दीवार सभी,
आज उसी को रण देना है जिसे दिया था प्यार कभी,
पर उमङ्ग की सरिता में संयम कायम रखना होगा,
विश्वमंच पर फूँक-फूँक कर पाँव हमें धरना होगा,
बुद्धि और बल जिसमें, होती कद्र उसी इन्सान की।
आग लगे तो कुआँ खोदने की आदत अब छोड़ें हम,
साधन औ' सिद्धान्त सभी से अपना नाता जोड़ें हम,
पग पग पर 'चाणक्य-नीति' का हमें सहारा लेना है,
अस्त्र-शस्त्र आधुनिक काल के 'चन्द्रगुप्त' को देना है,
तभी विश्व में ख्याति बढ़ेगी अपने हिन्दुस्तान की।

रेलवे रिसर्च सेन्टर, आलमबाग, लखनऊ।

जागो हे !

स्नेहलता 'स्नेह'

जागो हे ! जागो हे !

जाग उठे हैं धरती-अम्बर, जागा है इतिहास,
भूखे सिंह नहीं सोते हैं, कभी माँद के पास,
अपने जीवन की लाली से, लिखदो लाल कहानी ।

जागो हे ! जागो हे !

भारत माता के आँगन से, दुर्गा रही पुकार,
भारत की ललनाओं कर लो, फिर सोलह शृंगार,
गंगा यमुना उमड़ रही हैं, गति उनकी तूफानी ।

जागो हे ! जागो हे !

भारत ने झोली खोली है, तुम सर्वस्व लुटा दो,
तन, धन, जीवन, प्राण मेटकर, भीषण प्रलय मचादो,
तेरे जौहर को ज्वाला की जागी ज्योति पुरानी ।

जागो हे ! जागो हे !

गनेशगंज, लखनऊ ।

उद्‌बोधन

भगवती प्रसाद त्रिवेदी 'करुणेश'

आन-बान तुमने बचाई जान देकर भी,
राणा प्रताप के शिवा के संग डोले हो,

भारत के वासी भारती के भूमि रक्षक हो.
मंगल हो; ताँतिया, स्वतन्त्रता के चोले हो,

सामने तुम्हारे कौन शत्रु मौत लेगा मोल ?
गोले परमाणु के पराक्रम के शोले हो,
हालाहल घोले, भोले, अमृत पिये हो और–
गांधी-बोस-आँधी की तुला के तुम तोले हो।

लखनऊ

तब सुधा डोले गगन में

● बृज बिहारी सहगल

आज कोई कह रहा है खून से धरती भिगो दो,
जब सुधा डोले गगन में।

पाप के घट एक में गिनकर करोड़ों बूँद आये,
पुष्प के पाषाण पर दो कण चढ़े पर कब अघाये,
क्यों पढ़े कोई कहानी रूढ़ियों की, पीढ़ियों की,
जब चले अंगार पर दो पग जवानी झूम जाये।
बाँध कर सर में कफन औ' हाथ में वरदान लेकर—
चल पड़े अपनी लगन में।

मुक्तिका वह मार्ग जिसपर ताज भी है औ' जहर भी,
जिन्दगी के गाँव में निर्माण भी है औ' कहर भी;
साँस की पगडंडियों पर काल की अठखेलियाँ हैं,
शक्ति-गंगा के किनारे प्रलय भी है औ' लहर भी।
जागरण के गीत गाती हों भुजाएँ कर्बले पर,
मात को समझे चमन में।
तब सुधा डोले गगन में।

पाठ, पूजा पंडितों का औ' जवानों की जवानी,
खेलती तलवार पर हो धर्म-ग्रंथों की कहानी;
रोटियों का राग, अंतिम हिचकियों की ही सदा है,
धार पर धर धार देखे वीर की नस - नस रवानी।
झाँक अर्थी से बिखरते फूल अपने सामने ही—
फेंक दे माँ के चरण में।
तब सुधा डोले गगन में।

कायरों का काम है बैकुण्ठ को साथी बनाना,
चूम कर गंगाजली को नरक के चक्कर लगाना;
अस्थि-पिंजर जोड़ कर ही स्वर्ग तक सीढ़ी बनेगी,
मस्तियाँ बढ़ती रहीं तो देख लेना वह जमाना।
फूलती फलती रहे वह कब्र जिस पर दीप जलते—

इस शहीदाने वतन में।
तब सुधा डोले गगन में।

मौत का फरमान ही अरमान के कंधे सँजोता,
और मरघट की मही पर चैन से सुख नींद सोता,
एक ही निश्वास में मानव-मरण की रूप-रेखा,
एक ही बलिदान पर संसार भर आँखें भिगोता।
शक्ति की पूजा करे जो भक्त हो निस्वार्थ रण का,

प्यार हो जीवन मरण में—
तब सुधा डोले गगन में। आन०

लखीमपुर, खीरी।

●

हम आजादी के दीवाने

• राकेश

हम आजादी के दीवाने, जाते माँ की लाज बचाने ;
उन्नत हिमगिरि की की चोटी पर विजय-दुन्दुभी बजाने !
हम आजादी के दीवाने !

अंगारों पर चल सकते हैं, हँसकर आग निगल सकते हैं,
हम प्रतीक हैं अग्निवाण के, बन कर प्रलय मचल सकते हे ;
दुर्गम पर्वत चढ़ जायेंगे, बाधाओं में बढ़ जायेंगे,
अगर मृत्यु भी आये सम्मुख, ताल ठोंककर भिड़ जायेंगे ;
जब भी कदम बढ़ाया हमने, पीछे नहीं हटाया हमने,
बलिदानों की गौरव गाथा, जाते जग को आज सुनाने !
हम आजादी के दीवाने !!

हमको जिसने भी, ललकारा, क्षण में उसका शीश उतारा,
शोणित से भर दी बलिवेदी, जब भी माँ ने हमें पुकारा ;
इस तन पर आभार उसी का, रोम-रोम शृङ्गार उसी का,
जो कुछ भी है पास हमारे, सब पर है अधिकार उसी का ;
न्योछावर तन-मन-धन उस पर, न्योछावर वह जीवन उस पर,
प्रजातत्र के प्रहरी हैं हम, सारा जगत हमें पहिचाने !
हम आजादी के दीवाने !!

जागो फिर से शिवा भवानी, फिर से राणा के प्रण जागे,
जाग गई झाँसी की रानी, बल-विक्रम के लक्षण जागे ;
चंगेजी बर्बता हो या मंगोली की नादिरशाही,
सबने आकर शीश झुकाये, भारत के पौरुष के आगे ;
पहन चले केसरिया बाना, सबने जिसका लोहा माना,
निज पुरखों की शौर्य कथाएँ, फिर से जाते हम दुहराने !
हम आजादी के दीवाने !!

लखनऊ

अभियान

• गंगाप्रसाद पाण्डेय

पुण्य-पंथ पर चिन्ता क्या इस नश्वर प्रकृति-विधान की ।

अगर मर गये रण में तो फिर स्वर्ग तुम्हारे हाथ है,
जीते यदि घर का वैभव होना पुनः सनाथ है;
चला गया जब महावीर धरती से खुद दशमाथ है,
फिर तो निश्चय इन दुष्टों की होनी शक्ति अनाथ है।
भूलेंगे क्यों गाथा अपने राम कृष्ण भगवान की ।

किया न हमने कहीं किसी का देश कभी बरबाद है,
अगणित कानन हुए हमारे हाथों से आबाद हैं;
जावा और बोर्नियों की गाथायें सबको याद हैं,
तथा चीन का फाहियान भी करता खुद फरियाद है।
मिली धर्म की दृष्टि सभी को भारतवर्ष महान की ।

माना यह गौतम की धरती करुणा की रसधार है,
सदा शांति का सुखद विजन ले बहती मंद बयार है;
जहाँ सिद्धियाँ और निद्धियाँ हुई स्वयं साकार हैं,
पहरा देता पंचशील ही ले कर में तलवार है।
आँखों देखा है अशोक की धारा कठिन कृपाण की ।

उसे नहीं शस्त्रों का भय है गला न सकता नीर है,
वही जलाने की कर सकती अग्नि कभी तदबीर है;
जन्म-मरण के बन्धन से है मुक्त प्राण का पाहुना,
जो निरीह निर्लिप्त निरामय वह कब हुआ अधीर है।
नहीं आत्मवेत्ता को चिन्ता इस थोथे विज्ञान की ।

मत समझो यह पंचशील ही भारत का संदेश है,
जिसका उल्टा अर्थ लगा कर हुआ तुम्हें आवेश है;
अगर एक बच्चे के तन में रंचक शोणित शेष है।
मर जाने के लिए राष्ट्र पर गीता का उपदेश है।
वही घोषणा गूँज रही है संगर में अभियान की।

सारनाथ की ही धरती पर बसता राजस्थान है,
चद्रगुप्त की ही छाया में पला अशोक महान है;
'त्रिपिटिक' जिसने पढ़ा उसी को गीता का भी ज्ञान है।
शांति पुजारी बापू से कुछ कम न बोस का मान है।
यह पानी सा सरल तरल पर डरते हैं तूफान भी।

लखनऊ

जवानों से

● रामस्वरूप गुप्त 'ललाम'

सिंह के समान तुम उठो बहादुरो,
बज्र के समान तुम बनो बहादुरो,
शत्रु के पड़ाव वीर रौंदते चलो,
बार-बार बिजलियों से कौंधते चलो।

आँधियों से दौड़-दौड़ वीर तुम चलो,
शत्रुओं की छातियों को चीर तुम चलो,
राह में पहाड़ हो तो तोड़ते चलो,
अड़चनों की गर्दने मरोड़ते चलो।

यह समय नहीं कि गीत प्रेम के सुनो,
यह समय नहीं वियोग अग्नि में भुनो,
यह समय नहीं कि प्रेम काव्य को रचो,
यह समय नहीं कि प्राण दान से बचो।

इस समय तो तीव्र अग्नि ज्वाल से उठो,
इस समय महा कराल काल से उठो,
इस समय तो क्रुद्ध हस्ति-भाल से उठो,
इस समय तो क्रुद्ध चन्द्रभाल से उठो,

द्वार पर असंख्य श्वान भौंकने लगे,
देख सिंह के सपूत चौंकने लगे,
इस तरह बढ़ो कि बिजलियाँ तड़क उठें,
इस तरह बढ़ो जवानियाँ फड़क उठें।

तुम उठो तुम्हें स्वदेश आन की कसम,
तुम उठो तुम्हें है स्वाभिमान की कसम,
तुम उठो तुम्हें तुम्हारी जान की कसम,
तुम उठो तुम्हें है आन-बान की कसम।

मर्द की बहादुरी का इम्तहान है।
इम्तहाँ में जीत जवानों की शान है॥

राजा र० द० इण्टर कालेज,
सीतापुर।

सिंहनाद

● जगदेव प्रसाद

वर हंस वाहिनी वाणी मां वाणी को ऐसा दो प्रसाद,
जन-जन के हृदयों में मुखरित, हो गूँजे मेरा "सिंहनाद"।

जिस हिमगिरि के उत्तुंग शिखर आकाश चूमते रहते हैं,
जिस नगपति को प्रतिदिन प्रात: दिनकर अभिवादन करते हैं;
जिसकी चोटी पर प्रलयंकर शंकर भी आसन धरते हैं,
जो शिखर देव धुनि धारा से जग का पातक तम हरते हैं।

उसकी रक्षा की वेला है जागे जन जीवन तज विषाद,
जन-जन के हृदयों में मुखरित, हो गूँजे मेरा "सिंहनाद"।

जिसने हिंसा को त्याग दिया ले पंचशील का नव विधान,
जिसने सिखलाया भूतल को निज विश्व शाँति का मञ्जुगान;
जिसने मानव को मानव बन बतलाया करना योगदान,
जिसने उत्पीड़न, युद्ध द्वेष का किया विश्व व्यापी निदान।

चीनी गीदड़ झपकी को सुन जग पड़े केशरी त्याग मांद,
जन जन के हृदयों में मुखरित, हो गूँजे मेरा "सिंहनाद"।

राणा सांगा से वीर यहाँ राणा प्रताप से धीर हुये,
शिवराज वीर से दृढ़ प्रतिज्ञ जो रण से नहीं अधीर हुये;
श्री छत्रसाल, झाला नरेश मन्ना जी, से रणधीर हुये,
नाना साहब, तात्या टोपे, माधव सिंधें से वीर हुये।

लक्ष्मीबाई सी नारी की ऐसे अवसर पर करें याद,
जन जन के हृदयों में मुखरित, हो गूँजे मेरा "सिंहनाद"।

चीनी वर्बर सेनाओं को भारत के वीर पुकार उठें,
चाऊ-माऊ को पेकिंग तक हम भारतीय ललकार उठें;
रणचण्डी का आवाहन हो दुर्गा हो सिंह सँवार उठें,
काली विकराल रूप वाली खप्पर की ज्वाल सँवार उठें।

ताण्डव हो डमरू वाले का भैरव का हो वह प्रलयनाद,
जन जन के हृदयों में मुखरित हो गूँजे मेरा "सिंहनाद"।

श्री गाँधी विद्यालय, सिधौली
(सीतापुर)

चीनियों के नाम खुला पत्र

रवीन्द्र भ्रमर

हो सकता है क्या आज सहन,
पीड़ित मानव का यह क्रन्दन।
अंगड़ाई लेकर सिहर उठा—
घायल नगपति, जलता चन्दन।

छूटी समाधि, जागे त्रिनेत्र,
खसके गिरीश, व्याकुल नदीश।
डिम् डिम् निनाद पर रौद्र नृत्य,
धरती डोली, डोले फणीश।

शोणित खप्पर लेकर कराल,
काली कर में ले मुण्ड माल।
किलकारी मार बढ़ी आगे—
रिपुओं के दलती हुई भाल।

रण - कौशल कला गर्भ में ही,
हमने सीखी, अवतार लिया,
इक्कीस बार इस धरती पर,
हमने ही था अधिकार किया।

शैशव ने सूरज निगल लिया,
शेरों के दाँत गिने बचपन।
यौवन ने जौहर व्रत पाला,
तीरों पर सोया चौथापन।

नारियाँ यहाँ की दुर्गा हैं,
हर वीर यहाँ का शंकर है,
भारत का हर बच्चा सुन लो,
गणपति गणेश प्रलयंकर है।

Public Domain. Muthulakshmi Research Academy. Funded by IKS-MoE

तुम बौने चिमधे कुटिल क्रूर,
इसलिए तुम्हें बतलाते हैं।
हम भारत माँ के वीर पुत्र,
धरती के लाल कहाते हैं।

तुम पंचशील को भूल गये,
जिसने तुमको आलोक दिया,
खुद अपने हाथों से तुमने,
सोये शेरों को टोंक दिया।

हमने यदि कदम बढ़ाया तो,
पेकिंग को धूल मिला देंगे,
चीनी दीवार उड़ा देंगे,
जय का झण्डा फहरा देंगे।

लखनऊ।

बलिदान करो

● अयोध्या प्रसाद अवस्थी

बलिदानों की इस वेला में, बढ़-बढ़ कर तुम बलिदान करो !
भारतमाता की रक्षा हित, अर्पित तन, मन, धन, प्राण करो।
भारत की आजादी के हित, युवको मिल कर आगे आओ,
साहस, दृढ़ता, निश्चय से दुश्मन के सीने पर चढ़ जाओ।
भारत की पावन धरती पर, बर्बर चीनी है चढ़ आया,
छल, बल, प्रपञ्च मंत्री करके अपनी धरत पर बढ़ आया।
अब छोड़ प्रणय के गीतों के रण-चण्डी का आह्वान करो,
भारत की सेवा का यह सुन्दर स्वर्णिम अवसर आया है।
भारत की जनता ने एका का अद्भुत दृश्य दिखाया है,
सोने चाँदी की बात कौन हँस करके शीश कटा देंगे।
अपने फौलादी साहस से दुश्मन को मार भगा देंगे,
अपने स्वदेश के गौरव हित, अर्पित अपने अरमान करो।
तुम गाँव-गाँव, घर-घर जाकर बलिदानों का वह भाव भरो,
भारत के बच्चे-बच्चे को इस गौरव हित तैयार करो।
अब जगो किसानों मजदूरों, उत्पादन सब बढ़ता जाये,
राशन की कमी न होने से सैनिक बढ़-बढ़ लड़ता जाये।
अब भूल स्वार्थ मतभेदों को, अपने पौरुष का ध्यान करो,
माँ बहनें लक्ष्मी दुर्गा बन निश्चय ही अब आगे आवें।
झाँसी के रानी के समान, अब अपना गौरव दिखलावें,
भारत माता है माँग रही, आभूषण का अब करो दान।
हो गया अमर है झाँसी की रानी का वह गौरव महान्,
अनुगमन उसी का करो आज, अपने सोने का दान करो।
है कालचक्र का नियम अटल, निश्चय सबको मर जाना है,
माता हित प्राण गवाँने से अपने को अमर बनाना है।
आजादी की रक्षा के हित जो अपने प्राण गवायेंगे,
उनके वह गौरवपूर्ण कार्य, युग-युग तक गाये जायेंगे।
बन वीर चन्द्रशेखर, सुभाष, भारत की ऊँची शान करो !

नेहरू विद्यालय, सिधौली,
सीतापुर

कर्मदेव की अर्चना

● रमई काका

कर्म हमारा जीवन धन है कर्म धर्म ईमान है।
जो आलस में समय बिताये वह भी क्या इंसान है॥

प्रातः कर्म-यज्ञ की लाली जन-जन को ललकारती,
कुसुम-कुसुम पर किरन सँवारे कर्मदेव की आरती,

सूरज की मुस्कान लुटाती नित श्रम का वरदान है।
जो आलस में समय बिताये वह भी क्या इंसान है॥

बैलों की घण्टी करती है कर्मदेव की वन्दना,
श्रम की बूँदें ही करती हैं कर्मदेव की अर्चना,

आज कर्म की पूजा में रत हर मजदूर किसान है।
जो आलस में समय बिताये वह भी क्या इंसान है॥

खेत-खेत में आज उग रही, हर सैनिक की ढाल है,
हर मजदूर बनाने बैठा रक्षा की दीवाल है,

खून पसीना करके रखनी भारत माँ की शान है।
जो आलस में समय बिताये वह भी क्या इंसान है॥

कर्मठ मानव रहा बदलता विधि की लिखी लकीर है,
बिना परिश्रम के राजा भी होता यहाँ फकीर है,

सत्कर्मों से यह मानव भी हो जाता भगवान है।
जो आलस में समय बिताये वह भी क्या इंसान है॥

आकाशवाणी, लखनऊ।

पहरे पर वीर जवान चले

● शिवसिंह 'सरोज'

बदल गया इतिहास, युध के लिए बुद्ध भगवान चले,
पहरेदार हिमालय के, पहरे पर वीर जवान चले !

हिन्द महासागर गरजा है, लहर-लहर ललकार चली,
गंगा बढ़ी परछ रणचण्डी, यमुना की जलधार चली;
जब पानी में आग, हिमानी भी बन कर संहार चली,
चेत चीन ! चालीस कोटि की, चिनगी बन अंगार चली !

डोल उठा भूगोल, पहाड़ों पर चढ़कर मैदान चले,
पहरेदार हिमालय के, पहरे पर वीर जवान चले !

मिले कदम उठ पड़े वसन्ती बलि की विकट बयार चली,
जन सेना के साथ युद्धरत जनता की जयकार चली;
भिड़े टैंक से टैंक, धुएँ से मिली धुएँ की धार चली,
भारत की वाहिनी, दाहिनी हो 'जयहिन्द' पुकार चली !

साथ अरब अमरीका, जय के मलय और जापान चले,
पहरेदार हिमालय के, पहरे पर वीर जवान चले !

लोहे और लहू के योद्धा, भरते जब हुँकार चले,
सोना लिए सराफ, संग चांदी ले साहूकार चले,
अपना खून भरे अंजलि में, अपनों के उपचार चले,
आज समर की ओर, देश के हर उद्देश्य-विचार चले !

जन-गण के मन हुये एक तन, दान चले बलिदान चले,
पहरेदार हिमालय के, पहरे पर वीर जवान चले !

पानी के बुलबुले बज्र बन गए खून को देख चले,
अक्षर-अक्षर आग बबूला, क्रोधित कविता-लेख चले,
सिजदा-पूजा संग, जंग को सज कर पंडित-शेख चले,
सहमे शत्रु समय से पहले, तज कर सीमा-रेख चले,

शान्ति सूरमा संहारक बन, संगीनों को तान चले,
पहरेदार हिमालय के, पहरे पर वीर जवान चले !

चढ़ते चरण-चरण ऊपर हैं, किरण-किरण कुर्बान हुई,
सुबह-सुबह ही अमनें सुलह की, धरती लहू-लुहान हुई,
चढ़ो जवानों, हिमगिरि के सिर पर, घाटी-मैदान हुई,
जहाँ-जहाँ हिन्दुस्तानी हैं, माटी हिन्दुस्तान हुई,

तिब्बत तुमको ताक रहा, शंकित सिक्किम भूटान चले,
पहरेदार हिमालय के, पहरे पर वीर जवान चले !

ऊँचाई पर पहुँच सिपाही भी, ऊँचा उठ जाता है,
जिस के उभरे से सीने को आसमान सहलाता है,
सूरज खून गरम करता है, चन्दा चमर डुलाता है,
संकट में सचमुच सैनिक, देवता स्वयं बन जाता है;

हम भी पूजा को ले करके, अपने जय के गान चले,
पहरेदार हिमालय के, पहरे पर वीर जवान चले !

बोले कौन ? बबरशेरों का परवत पर वनवास चला,
बढ़ कर आज झपट लेने दो, अब तक बहुत उपास चला,
एक-एक पदचिन्ह चूम कर, एक-एक विश्वास चला,
एक-एक योद्धा के बल पर, एक-एक इतिहास चला,

अगणित बाँहों का बल ले कर, अगणित हिन्दुस्तान चले,
पहरेदार हिमालय के, पहरे पर वीर जवान चले !

लखनऊ ।

मेरा देश | ● रामेश्वर दत्त 'मानव'

मेरा देश हिमालय के इस पार भी,
मेरा देश हिमालय के उस पार भी,
सबसे पहले अपना भारत देश है,
यों तो है कुटुम्ब सारा संसार भी।

कितनी उर्वर भारतीय कवि-कल्पना,
दल के दल शतदल खिलते हैं प्रात में;
योगिराज कैलास शिखर पर ध्यान रत,
बैठे रचा विभूति समूचे गात में।

आततायियो ! तुमने छेड़ा हंस को,
तुमने छेड़ा सरस्वती के वंश को;
मानसरोवर का जीवन पंकिल किया,
किया पद दलित भारत माँ के अंश को।

योगिराज ध्यानस्थ हमारे हैं जहाँ,
कैसे अधिकारी हो सकते तुम वहाँ?
बारूदी दुर्गन्ध न फैलाओ सुनो,
खुला तीसरा नेत्र बचोगे तुम कहाँ?

हिमगिरि मेरा पिता जीवनाधार है,
मेरी माँ के मस्तक का शृंगार है;
सृष्टिकाल से यह मेरा रक्षक रहा,
इसकी रक्षा का अब हम पर भार है।

बर्फ नहीं यह रजत, रजत की राशि है;
जिसको पाकर हम हर भांति समृद्ध हैं;
उठो भारतीयो शस्त्रास्त्र संभाल लो,
मँडराते अब इस पर चीनी गृद्ध हैं।

देश के लिए हम दे देंगे जान भी,
देश के लिए हम ले लेंगे जान भी;
सहनशीलता मेरी जग में सिद्ध है,
जगत विदित है किन्तु आत्मसम्मान भी।

कैलाश पुकारे

● लवकुश

पग न रुकेंगे, सिर न झुकेंगे कभी हमारे,
चलो चलें उस ओर जहाँ कैलास पुकारे।

फूलों से सुकुमार लाल हम भारत माँ के,
शूलों पर भी मुसकाना हमने सीखा है,
मेहमानों के स्वागत को गलहार बने हम,
पर दुश्मन को चुभ जाना हमने सीखा है।

दया, क्षमा, ममता, युग-युग से बाँटी हमने,
किन्तु बैरियों पर बरसे बनकर अंगारे।
चलो चलें उस ओर जहाँ कैलास पुकारे।

सागर की गोदी से हमको शान्ति मिली है,
आँधी से वह गति, जो पल में प्रलय मचाये,
सहनशक्ति की बूटी शंकर से पायी है,
गंगा से वह पुण्य कि जो हर दुख हर जाये।

पर्वत से गम्भीर, वज्र सा हृदय मिला है,
तूफानों से मचल उठें अरमान कुँवारे।
चलो चलें उस ओर जहाँ कैलास पुकारे।

विश्वबन्धुता के सपने साकार करें हम,
और बंधु के हत्यारे बनकर तुम आये;
किन्तु हमारी सीमा तो लक्ष्मण रेखा है,
इञ्च-इञ्च धरती पर हम सर्वस्व लुटायें।

प्रलयंकर की आँख खुले तो सर्वनाश हो ;
डोलेगी धरती यदि शेषनाग फुंफकारे।
चलो चलें उस ओर जहाँ कैलास पुकारे।

सावधान रे अन्ध ! आज हम फिर कहते हैं,
युद्ध छोड़ दे, वापस अपने घर को जाए,
रीति-नीति की दीक्षा ले अपने कुलगुरु से,
जैसे वे आये थे वैसे तू भी आये।

जिस बल बूते पर तूने संग्राम रचा है ;
उस पर सत्य विजय के ही गूँजेंगे नारे।
चलो चलें उस ओर जहाँ कैलास पुकारे।

सिधौली, सीतापुर।

सिंहों की दहाड़ शृगालों को खल रही

● दिवाकर

हम हिन्द के जवान दहकते अँगार हैं।

है खून शहीदों का रगों में उछल रहा,
दुश्मन के हौसले का जनाजा निकल रहा ;
फौलाद की दीवार से, सीमा पै हम डटे,
तोपों की धड़ाके से कहाँ दिल दहल रहा।

हम दूत सवेरे के, उषा के सिंगार हैं।

जो हमसफर हो आये, जवानी मचल रही,
सिंहों की यह दहाड़, शृगालों को खल रही,
हैं प्राण-प्रदीपों की कतारें सजी हुई,
दीवट बना के तन को, स्वयम् ज्योति जल रही।

हम पेड़ उजाले के, विहँसती बहार है।

सिंदूर उषा का न पुँछा है, न पुँछेगा,
पूरब का भाल सूर्य से सजता है, सजेगा ;
कबतक रहेगा मौन, भला उच्च हिमालय,
यश का नगाड़ा आदि से बजता है, बजेगा।

हम जिन्दगी के राग, प्रभा के सितार हैं।

हम एक होके, शील का झण्डा उठा रहे,
हम बुद्ध का संदेश, युगों से निभा रहे ;
हिंसा का दाँव अब न अहिंसा पै चलेगा,
दुश्मन हमारी शक्ति को हैं अजमाँ रहे।

हम आज प्रलय हेतु सृजन की पुकार हैं।

●

लखनऊ।

लड़ने चलो जवान | ● रमेश गुप्त

देश रक्षा का ले अभिमान,
चीन से लड़ने चलो जवान।

आज फिर सदियों के पश्चात,
युद्ध को हो जाओ तैयार।
अतिथि स्वागत तुम के सिरमौर,
करो इसका जी भर सत्कार !
शत्रु के सौ मुँह वाले नाग,
कील दो इनके हर फन आज !
दिखा दो अपने असि की धार,
न लौटें ये अपना मन मार !

समय का सुनकर के आह्वान,
चलो वीरों सीने को तान !

बचाने को अपना कैलास,
चलो मिल कोटि-कोटि एक सग !
शीश पर अपने कफन लपेट,
चलो ले करके नई उमंग !
शत्रु के गिन-गिन शीश उतार
पाट दो 'नेफा' औ 'लद्दाख' !
रचा दो ऐसा ताण्डव नृत्य,
देख कर दुश्मन होवे दंग !

कुचलने को दुश्मन का मान,
बढ़ो ले कर में राष्ट्र निशान !
देश रक्षा हित हो अभिमान,
शत्रु से लड़ने चलो जवान !

लखनऊ।

युद्ध का बिगुल बजा | ● सी० एम० बरनवाल

शत्रु के प्रहार से अनेक वाणियाँ विकल,
युद्ध गान गा रहा समग्र हिन्द देश आज,
जीर्ण केंचुली अतीत की उतार फेंक दो,
शक्ति युक्त हैं दिगन्त आज सजे नए साज ।

महान क्या ? जो मातृभूमि त्रस्त हो न गा सके,
महान क्या ? नयी जवानियाँ न जो जगा सके,
महान क्या ? न पर्वतों के बीच राह जो गढ़े,
महान क्या न शत्रु को पछाड़ वक्ष पर चढ़े ।

युद्ध का बिगुल बजा सजा हुआ प्रवीर है,
हृदय अमर्ष से भरा प्रवीर वह समीर है ।
देश का महान ये विहान आज हो रहा,
शत्रु संकुचित विनाश-अंधकार रो रहा ।

देख आज हो रहा सफल प्रयास देश का,
क्यों न मुखर हो उठे कराल वेश शेष का ।
क्यों न लपलपा उठे कृपाण शीष के लिये,
क्यों न चरण बढ़ चलें प्रगति सुधामयी पिये ।

क्यों न युद्ध-ज्वार वृद्ध-बाल में उमड़ चले,
क्यों न सिद्धि मेघ अन्तरिक्ष में घुमड़ चले ।

श्री गाँधी विद्यालय इन्टर कालेज,
सिधौली, सीतापुर ।

रणचण्डी

● श्रीधर त्रिपाठी 'विकल'

रणचण्डी ललकार उठी, है आज मरण की वेला रे !
मात्र भूमि हित करो निछावर यह जीवन अलबेला रे !

मातु चण्डिका ले पिचकारी,
कहे सुनो ऐ नर-नारी,
आयो आज प्रभात सुनहरा,
निशा मिटी भ्रम की सारी।

इस दुनिया की राजनीति में, फैला सुखद सवेरा रे।
रणचण्डी ललकार उठी, है आज मरण की वेला रे ।।

चलो एक लय से पग ध्वनि कर,
पहले दुश्मन सुन गह्वर स्वर,
लाई बहनें साज आरती,
रक्त तिलक लो मस्तक पर,

प्राणों से मत करो मोह, यह चार दिनों का मेला रे।
रणचण्डी ललकार उठी है आज मिलन की वेला रे ।।

बाट जोहता है प्रति पल, क्षण,
अमर शहीदों का रण प्रांगण,
मातु अश्रुओं के निर्भर झर,
देते हैं रण को आमन्त्रण।

बज्र पगों से डिगे धरातल, शत्रु न बचे अकेला रे।
रणचण्डी ललकार उठी, है आज मरण की वेला रे ।।

सिधौली ।

चाऊ से

श्यामसुन्दर मिश्र 'मधुप'

शान्तिमय नीति से ही पानी हीन जाना हमे,
रजपूतो रेत में भी पानी अभी बाकी है।
शिवा औ' प्रताप की कहानी तुम्हें ज्ञात नहीं,
चेतक के टापों की निशानी अभी बाकी है।
चाऊ! ठंढी देह देख हिमगिरि की क्या जाना,
जाह्नवी के पानी में रवानी अभी बाकी है।
बालों की सफेदी नहीं बर्फ की सफेदी है,
रोम-रोम हिन्द के जवानी अभी बाकी है॥

मुक्तक

चाऊ! मत समझो ये भूमि बंजर है परती है।
भारत माँ का भाल ये ऊँची-ऊँची धरती है।
तुम भूल गए कि यह देश तुम्हारा गुरुकुल है,
देखो फाह्यान की आत्मा यहीं विचरती है।
तुम चले हो कदाचित् कुछ पाने के लिए,
ह्वाँगहो की ताकत हिमालय पै आजमाने के लिए,
मगर मैं कहता हूँ सुन लो चाऊ-एन-लाई।
चले हो चीन का कल्चर ही मिटाने के लिए।

हबीबुल्ला होस्टल, लखनऊ।

नवजवानों के प्रति

● रंगनाथ मिश्र 'सत्य'

उठो देश के नवजवानों बढ़ो ये कहानी तुम्हारी पुरानी नहीं है ।।

किया स्वार्थ में जिसने गद्दारी माँ से,
उसी का सदा सर ढहाया गया है,
किया छल कपट जो उसी का लहू,
धार बन कर हमेशा बहाया गया है,

करो आज सर्वस्व बलिदान अपना,
रहे साँस जब तक बढ़े ही चलो तुम,
कदम मत हटाना रहें प्राण जब तक कहानी पुरानी भुलानी नहीं है ।

अगर खून में शेष कुछ भी रवानी,
तो सच की धरा पर उतर करके आओ,
बढ़ो एक होकर अँधेरी डगर पर,
सृजन सूर्य अपनी लगन से उगाओ।

सुनो आज दिन ऋण चुकाने का आया,
यही संकटों की घड़ी चाहती है,
करो होश पैदा जो मदहोश आया नहीं तो तुम्हारी जवानी नही है ।।

भगतसिंह आजाद नाना फरनवीस,
का नाम तुमको मिटाना नहीं है,
झाँसी की रानी का बलिदान बीरों,
रहे खून जब तक भुलाना नहीं है,

समय आ गया अब उसी वीरता का,
बढ़ो राष्ट्र हित जान पर खेल जाओ,
मिटा दो, हटा दो, भगा दो, हरा दो, न सोचो कि गोली चलानी नहीं है ।।

रायबरेली ।

●

प्रेरणा-गीत

● मयंक

भारत माँ की माटी पर, बर्फीले मैदानों में,
आज युद्ध की रणभेरी फिर गरज उठी,
हो तुममें कोई वीर शिवा तो असि वरदानी ग्रहण करो।

बिगुल बजाओ जिससे जगती दहल उठे।
कांपे धरती अम्बर नील। सागर उछल उठे।
जाग उठे फिर भैरव राग दिशाओं में।
लोहू में भी ताण्डव फिर से मचल उठे।

सुनो! सुनो! तुम युग की आज पुकार को।
कर में थामो अब नंगी तलवार को।
बाग जिसे सींचा है हमने रक्त से।
शत्रु रौंदने आया देखो उसकी भरी बहार को।

उत्तर की सीमा में, नगपति के आंगन में
विजय वधू बन हेलन सी असहाय खड़ी
हो तुममें कोई चंद्रगुप्त तो उसको जाकर वरण करो।

आज देश हित होना है कुर्बान तुम्हें।
आजादी के लिए शीश का देना है बलिदान तुम्हें।
अग्नि लपट सी धधकी गोला गोली की बौछार में।
शत्रु सैन्य के सम्मुख जा कर बनना है पाषाण तुम्हें।

कायर का काला मुँह करके छोड़ दो।
जयचन्दों के सिर को घट सा तोड़ दो।
नया मोड़ दो भारत के इतिहास को।
आज शहीदोंकी सूचीमें अपनेको भी जोड़ दो।

नीफा की पावन धरती पर, लद्दाखी चट्टानों में
अन्यायी ने आज खून की होली खेली है
हो तुममें कोई अंगद तो अब अपना दृढ़तम चरण करो।

घायल होकर दुखिया माँ ने तुमको आज पुकारा है।
आज खून से प्यास बुझाने को आया हत्यारा है।
शब्द नहीं तुम वाणी में अंगार भरो।
आज हमारी आजादी को दुश्मन ने ललकारा है।

अधरों पर मुस्कान नयन में रोष भरो।
स्वर शब्दों में वाणी में जय घोष करो।
एक इंच भी भूमि शत्रु के जब तक पास रहे।
तब तक मन में जरा नहीं संतोष भरो।

तिब्बत के तट पर, पेकिंग की घाटी में।
चाऊ की संयोगिता कुमारी खड़ी हुई।
हो तुममें कोई पृथीराज तो उसका जाकर हरण करो।

सीतापुर

नगराज अमर बलि माँग रहा | ● अवधेश 'सुमन'

चीनियो रहो तुम सावधान, नाहक तुमने ललकारा है,
नेफा की चौकी को छोड़ो तिब्बत सम्पूर्ण हमारा है।
तुम करते हो रण का प्रयत्न कितनी भीषण नादानी है।
तुम अब तक समझ नहीं पाये कितना भारत में पानी है,
हम शान्ति अहिंसा के प्रतीक सबका दुख हरने वाले हैं।
शोषित जन के हित में सदैव परिवर्तन करने वाले हैं,
निज आन मान ध्रुव के समान, अविचल यश बरने वाले हैं।
चीनी पिशाच तू सम्हल, सम्हल कब तुझसे डरने वाले हैं,
तुम भूल गये गाण्डीव तीर अक्षय तूणीर प्रहारों को।
तुम भूल गये हो पञ्चशील हिन्दी जन के उपकारों को।
तुम भूले भारत वीर शिवा राणा की उन हुङ्कारों को।
तुम नहीं अभी तक जान सके झाँसी वाली तलवारों का।
याज्ञिक शुभ श्रेष्ठ विप्रवर हैं तेरा बलिदान करेंगे हम,
कैलासनाथ त्रिभुवनपति श्री शिव का सम्मान करेंगे हम।
नगराज अगर बलि माँग रहा जो अटल शृंग अविजित महान,
तो माँ तू मत होना निराश करने को प्रस्तुत रक्त दान।
कण कण होगा तुमुल युद्ध अणु अणु पर होगी रण-होली,
चीनी जन के मद भंजनहित हर मग होगा थरमा पोली।

बलदेव नगर
सीतापुर

गिरोद्घोषितस्सिघनादः | ● अखिलेश मिश्र

या वै पूज्या धरित्री, विधुविमलरुचिर्यत्रकान्तिर्विभर्त्ति
वर्ण व्यंग्यैर्विविक्ताभरणमधुरवाग्वृत्तिगोऽसौ पढ़ीसः (शः)
साध्यान् सिद्धौ प्रवर्तन्तरिविपुलबलक्षीणयन्तः युवानः
तेषाम् संकल्पपुष्टो सफलमयातु गिरोद्घोषितस्सिघनादः ।